Volume-4, No. I, Feb-2017, pp.Hin.-11-13

ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के किशोर वर्ग के विधार्थियों की अभिवृत्ति का शैक्षिक निष्पत्ति, बृद्धि, स्मृति एवं अकांक्षा स्तर के साथ सह सम्बंध–एक अध्ययन

डा. सचिन कुमार , असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग)
मंगलायतन विश्वविघालय बेसवॉ, अलीगढ, उत्तर प्रदेश
मिस. रीता चौधरी, शोधकर्त्री

सार

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन–चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु में उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर चलता है। विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है। किसी भी विधार्थी की स्कूल विषयों में सफलता उसके आंन्तरिक गुणों पर निर्भर करती है। शैक्षिक उपलब्धि का सीधा सम्बन्ध बुद्धि तथा इससे सम्बंधित कई तथ्यों से होता है। जिनमें कार्य के प्रति अभिवृति, सीखने मे रूचि स्मृति अभिव्यक्ति , सीखने की आदत तथा पास पड़ोस का वातावरण मुख्य है। प्रस्तुत शोध में अभिवृन्ति शैक्षिक उपलब्धि, स्मृति बुद्धि तथा अकांक्षा स्तर को ही लिया गया है।

मुख्य शब्द– अध्ययन की आवश्यकता, शोध अध्ययन के उद्देश्य, शोध परिकल्पना, अध्ययन विधि निष्कर्ष,

प्रस्तावना

भारतीय संविधान केवल वैधानिक उपलब्धि का संकलन मात्र नही है। इसमें राष्ट्र की आत्मा के भी दर्शन होते है। भारत मात्र राज्य का आदर्श और उद्देश्य किस प्रकार के राष्ट्र का निर्माण करता है। इसका निर्देशन संविधान की प्रस्तावना में किया गया है। आज देश में पढने– पढाने की समान सुविधायें सवर्ण और हरिजनों को समान रूप से प्राप्त है तथा एक ही कक्षा में एक ही अध्यापक द्वारा एक ही परिसर में दोनो वर्गो के छात्र अध्ययन कर रहे है परन्तु फिर भी '' हरिजन'' वर्ग आज भी अपने को पिछड़ा हुआ समझ रहा है। किसी भी विद्यार्थी की स्कूल विषयों में सफलता उसके आन्तरिक गुणों पर निर्भर करती है। उसकी शैक्षिक उपलब्धि का सीधा सम्बन्ध बुद्धि तथा इससे सम्बन्धित कई तथ्यों से होता है। जिनमें कार्य के प्रति अभिवृत्ति, सीखने में रूचि स्मृति, अभिव्यक्ति, सीखने की आदत तथा पास पड़ोस का वातावरण मुख्य है। किसी भी अध्ययन में एक साथ इन सभी तथ्यों अथवा इससे कुछ अधिक तथ्यों का अध्ययन करना सम्भव नहीं है अतः प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति शैक्षिक उपलब्धि, स्मृति बुद्धि तथा आकांक्षा स्तर को ही लिया गया है। स्कूल के कार्य में अनमनस्क रूप से भाग लेने के कारण छात्रों की उपलब्धि निराशाजनक रहती है इनके कारणों को भी ढूँढा गया है। सरकारी तथा बहुत सी सामाजिक संस्थायें इस वर्ग को भर पूर आर्थिक सहयता दे रही है परन्तु इस वर्ग के लोगों द्वारा अभी तक जो प्रदर्शन किया गया है वह प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता है।

1. अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा आधुनिक युग की प्रथम आवश्यकता मानी जा सकती है। ग्रामीण समुदाय का जीवन स्तर ही देश का जीवन स्तर माना जाता है। इस समुदाय की प्रगति सम्पूर्ण देश की प्रगति मानी जाती है। भारत को उन्नत व ग्रमीण विकास के क्षेत्र को सर्थक बनाया जाना चाहिये रचानात्मक कार्यो के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र मे बेकार पड़ी ग्रामीण समुदाय की अपार जनशक्ति और साधन का समुचित उपयोग किया जाना चाहियें। ग्रामीण समुदाय की अनुसूचित जाति का यह विकास माध्यमिक

स्तर की शिक्षा द्वारा काफी संभव है। इस परिपेक्षय में यह अध्ययन अति महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. ग्रामीण क्षेत्र के सुवर्ण लड़कों एवं हरिजन लड़कों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य समानता का पता लगाना।
2. ग्रमीण क्षेत्र की सुवर्ण लड़कियों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं हरिजन लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धता के मध्य असमानता का पता लगाना।
3. हरिजन युवावर्ग एवं सवर्ण युवावर्ग की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य असमानता का पता लगाना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना–

01. ग्रामीण क्षेत्र के हरिजन एवं सुवर्ण लड़को की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य असमानता नहीं होती है।
02. ग्रामीण क्षेत्र की हरिजन एवं सुवर्ण लड़कियो की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य असमानता नहीं होती है।
03. हरिजन एवं सुवर्ण जाति के युवावर्ग में शैक्षिक निष्पत्ति के आधार पर असमानता नहीं होती है।

परिसीमन–प्रस्तुत शोध अध्ययन में गाजियाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 600 छात्रों का चयन किया गया है।

अध्ययन विधि–प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध कर्त्ता के द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधी Descriptive survey Method का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण–प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वयं निर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है जिनमें स्मृति मापनी, अभिवृन्ति मापनी, आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया है

1. **प्रदत्त संकलन की विधि** प्रदत्त संकलन के हेतु शोधार्थी ने न्यादर्श के रूप में चयनित जनपद गाजियाबाद के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति के किशोर वर्ग के 600 छात्रों से स्मृति मापनी– अभिवृन्ति मापनी को प्रशासित किया गया। इसके उपरान्त सांख्यकीय विश्लेषण किया गया है।

तालिका न0 5.3 (बी)

क्रमांक	अंकों का प्रतिशत	स्मृति अधिकतम अंक 20	एल0ए0 मध्य एल ए	अभिवृत्ति अधिकतम अंक 150	बुद्धिलब्धि
1	56	8	2.6	96	80
2	21	5	7.8	94	72
3	30	7	9.3	86	69
4	30	16	5.1	109	76
5	30	6	3.2	96	78
6	30	2	3.3	103	80
7	25	3	2.2	117	80
8	42	9	5.5	124	107
9	30	8	15.1	97	62
10	37	12	12.4	94	96
11	34	14	14.6	101	69
12	28	6	1.6	92	75
13	36	8	4.8	127	57
14	33	10	6.5	102	90
15	34	4	14.7	89	69
16	34	7	9.4	90	63
17	33	5	8.2	117	64
18	36	4	6.8	97	82
19	32	3	3.7	98	86
20	40	5	5	95	91

5. तालिका न0 5.3 (सी)

क्रमांक	अंकों का प्रतिशत	स्मृति अधिकतम अंक 20	एल0ए0 मध्य एल.ए	अभिवृन्ति अधिकतम अंक 150	बुद्धिलब्धि
1	44	3	12.7	102	78
2	45	4	10.4	122	70
3	42	5	11.3	94	67
4	45	4	12.2	90	68
5	45	4	7.6	91	67
6	43	5	13.8	109	65
7	43	4	11.4	99	64
8	41	8	6.1	120	66
9	47	8	5.2	94	73
10	45	9	10.6	102	74
11	35	3	14.8	117	66
12	43	9	10.1	115	67
13	45	10	6.4	110	67

14	50	20	14	96	75
15	42	14	12.4	96	64
16	45	14	12.1	91	89
17	42	16	3.6	101	102
18	39	15	4.2	98	101
19	34	10	3.6	91	67
20	46	18	6.9	98	62

6. प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विघालयों के अनुसूचित जाति के बालकों की अभिवृन्ति , शैक्षिक निष्पत्ति बुद्धि स्मृति एवं अकांक्षा स्तर के साथ सहसम्बन्ध का प्रदत्त विश्लेषण में तालिका क्रमांक 1 व तालिका क्रमांक 4 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है। कि ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित बालकों के अंक ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित बालिकाओं के अंको से अधिक है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित बालकों का स्मृति स्तर ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित बालिकाओं के स्मृति स्तर से कम है। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की बालिकाओं की बुद्धि लब्धि ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के बालकों से न्यूनतम पायी गयी।

निष्कर्ष

परिकल्पना–1

ग्रामीण क्षेत्र के हरिजन एवं सुवर्ण लड़कों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य असमानता नही होती है। ग्रामीण क्षेत्र हरिजन और सुवर्ण लड़कों का माध्य अंतर 3.700 है जो कि .05 पर सार्थक है (सीडी ऐट 5% लेवल =2.920) अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती हैं सारणी 5.3 (बी½ एवं 5.3 सी ए टू जेड।

परिकल्पना–2

गग्रमीण क्षेत्र के हरिजन एवं सुवर्ण लड़कियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य असमानता नही होती है।

ग्रामीण क्षेत्र की हरिजन और सुवर्ण लड़कियों का माध्य अंतर 7.826 है जो कि .05 स्केल पर सार्थक है (सीडी ऐट 5% लेवल =3.576) अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती हैं सारणी 5.3 (बी) एवं 5.3 (सी) ए टू जेड।

परिकल्पना–3

हरिजन एवं सुवर्ण जाति के युवा वर्ग में शैक्षिक निष्पत्ति के आधार पर असमानता नही रहती है। सारणी 5.3 (बी) से यह देखा गया है कि सुवर्ण जति के युवा वर्ग की शैक्षिक निष्पत्ति 45.203 हरिजन जाति के युवा की शैक्षिक निष्पत्ति 40.020 के सार्थक रूप से उच्च .05 सार्थक स्तर पर सार्थक है अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती हैं सारणी 5.3 (बी) एवं 5.3 (सी)।

संन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाल. हंसराज शर्मा मंजुलता, प्रतिभाशालियों की शिक्षा, शिपरा पब्लिकेशन,दिल्लीय।
2. भटनागर , ए0बी0, अधिगम कर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया लाल बुक डिपों–मेरठ।
3. झा, दिलीप कुमार, शोध कार्य, श्री लाल बहादुर संस्कृत विघापीठ विश्वविघालय, दिल्ली ।
4. लाल, रमन बिहारी, भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा. पं0 श्री राम, अपरिमित संभावनाओं का आधार मानवी व्यक्तित्व, प्रकाशक, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
6. जयसवाल. डा0 सीताराम, सामान्य मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपों नई दिल्ली।
7. कृष्ण मूर्ति जे0, संस्कृति का प्रश्न कृष्णमूति फाउनडेशन इंडिया राजघाट फोर्ट वाराणसी।
8. कुमार, आनन्द, आत्मविश्वास , राजपाल एण्ड संन्स , दिल्ली।
9. जोशी , धनंजय, नैतिक शिक्षा एवं नागरिक शोध कनिडक पब्लिशर्स, दिल्ली।